आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : ग्यारहवां | मार्च–2014

4

ओ मन मूर्ख, अब तो जाग

(एक शब्द)

5

अरदास

(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
(सनबॉर्न्टन अमेरिका)

19

सवाल–जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

34

धन्य अजायब

दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

संपादक	उप संपादक	विशेष सलाहकार	संपादकीय सहयोगी
प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 098 71 50 19 99	नन्दनी	गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04	रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2014 –144– **मूल्य - पाँच रुपये**

ओ मन मूर्ख, अब तो जाग

ओ मन मूर्ख, अब तो जाग, (2)

1. रात अंधेरी, पथ अनजाना, सिर पर है, पापों का भार,
गहरी नदिया, नाव पुरानी, और उसमें भी, छेद हजार, (2)
बीत गए युग, सोते–सोते, अरे आलसी, निंद्रा त्याग,
ओ मन मूर्ख .....

2. मात–पिता, भाई सुत दारा, समझ रहा जिनको, अति प्यारा,
प्राणों का पंछी, उड़ते ही, कर जाऐंगे, सभी किनारा, (2)
सबकी अपनी–अपनी, ड़फ़ली, सबका अपना–अपना, राग,
ओ मन मूर्ख .....

3. सकल सत्य का, सार नाम है, जीवन का, आधार नाम है,
प्रेम नाम है, प्यार नाम है, कहते बेड़ा, पार नाम है, (2)
गुरु का पावन, कृपाल नाम है, करे प्रतिपाल, और अनुराग,
ओ मन मूर्ख .....

4. सौ काम छोड़, सतसंग में जाना, हज़ार काम छोड़, बंदे ध्यान लगाना,
जितनी ज़रूरत, तन को खाने की, आत्मा भी माँगे, सिमरन खाना, (2)
वाक 'अजायब' याद, रख कृपाल का, खा ली ठोकरें, अब तो जाग,
ओ मन मूर्ख .....

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अरदास

कबीर साहब की बानी

सनबॉर्न्टन अमेरिका

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम करके अपना यश करने का मौका दिया है। कण-कण में व्यापक परमात्मा कृपाल जब तक शरीर करके मुझे नहीं मिले थे तब भी मेरी यही **अरदास** थी कि जिसे परमात्मा कहते हैं जो सबकी संभाल करने वाला है अगर तू कहीं है तो मुझे मिल!

हे परमात्मा कृपाल! मेरा दुनिया के किसी भी कर्म-धर्म में यकीन नहीं रहा। तू मुझे अपना 'नाम' बख्श। तेरा नाम पापियों को पुन्नी बनाता है। वह नाम कण-कण में व्यापक है।

विनती और **अरदास** में बड़ी भारी शक्ति होती है अगर शिष्य सच्चे दिल से विनती करे, पुकार करे तो उसका गुरु दरगाह में

उसकी विनती जरूर सुनता है लेकिन पुकार और **अरदास** ऊँची-सुच्ची होनी चाहिए। शिष्य गुरु से गुरु को ही माँगता है। शिष्य में हौमें-अहंकार नहीं होना चाहिए। गुरु **अरदास** को जरूर सुनता है क्योंकि अरदास आत्मा से निकलती है।

सच्चा शिष्य कभी भी अपने धन-दौलत, इल्म या हुनर का मान नहीं करता। शिष्य अपने गुरु के आगे निमाणा, निताना व आजिज़ होकर रहता है। शिष्य दासों का भी दास बनकर रहता है। सच्चा शिष्य कभी भी अपने गुणों की तरफ नहीं देखता और न ही अपने गुणों की नुमाईश करता है बल्कि वह अपने अवगुणों की तरफ देखता है। सच्चे शिष्य की निगाह ही बदल जाती है। वह दुनिया की कमजोरियाँ की तरफ नहीं बल्कि अपनी कमजोरियों की तरफ देखता है। वह अपनी कमजोरियों को दूर करने के लिए अपने गुरु के आगे सच्चे दिल से **अरदास** करता है।

जैसे एक मरीज डॉक्टर के आगे अपनी बेहतरी के लिए फरियाद करता है इसी तरह सच्चा शिष्य भी अपने गुरु के आगे अरदास करता है, ''मैं पापी हूँ तू पाप खंडन है। मैं अवगुणों से भरा हुआ हूँ, तू अवगुणों को माफ करने वाला है। मैं बंधनों में बंधा हुआ हूँ और तू बंधनों से मुक्त करने वाला है।''

हे प्यारे सतगुरु! अगर हम पापों के पहाड़ इकट्ठे न करते तो तू किसे बख्शता, तुझे बख्शनहार कौन कहता! सच्चा शिष्य सदा ही अपने गुरु के आगे नम्र होकर, आजिज़ होकर रहता है क्योंकि उसे पता है कि मेरा गुरु करण-कारण है, समरथ है और दीनों का दयाल है। इसलिए शिष्य कहता है कि अगर तू दीनों का दयाल है तो मेरे जैसा दीन कौन है? आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला हैः

प्रीत लगी तुम नाम की, पल बिसरै नाहीं।।

कबीर साहब बड़े प्यार से एक विरह वाली आत्मा का फोटो खींचकर कहते हैं, ''अगर किसी औरत का किसी मर्द से प्यार हो जाए या किसी मर्द का किसी औरत से प्यार हो जाए वे जब तक एक दूसरे से मिल नहीं लेते तब तक उनके तन-मन में तड़प लगी रहती है। वे जब एक-दूसरे से मिलकर आँखें चार कर लेते हैं तो ही उनके तन-मन को शांति आती है।''

अगर दुनिया के प्यार की यह हालत है जबकि इस दुनियावी प्यार में आरजी सब्र और शांति महसूस होती है लेकिन उससे दोगुनी आग भड़कती है। दुनियावी प्यार में न तो आज तक किसी को शांति मिली है और न मिल ही सकती है। हम जितनी ज्यादा लकड़ियाँ आग में डालेंगे उतना ही भांबड़ ज्यादा मचेगा।

गुरु और शिष्य के प्यार में भी यही जज्बा काम करता है। जब शिष्य के अंदर सच्ची प्रीत पैदा हो जाती है और वह अपने गुरु से आँखें चार नहीं कर लेता तब तक उसे भी शांति नहीं आती उसका तन-मन तपता रहता है। विरह में अपने आप ही आँखों से पानी निकलता है।

प्यारेयो! जिन शिष्यों के अंदर सच्चा प्यार जाग जाता है, कभी उनके पास बैठकर उनके गुरु की कहानियाँ सुनकर देखें। चाहे उनके पास दिन-रात बैठे रहें उनकी कहानियाँ खत्म नहीं होती, उनके प्यार की बातें खत्म नहीं होती। सच तो यह है कि जहाँ उनके गुरु की, दोस्त की कोई बात नहीं करता वे उस सभा को ही दरकार मानते हैं।

गल न करन यार दी जित्थे, ओह सभा दरकार नहीं।

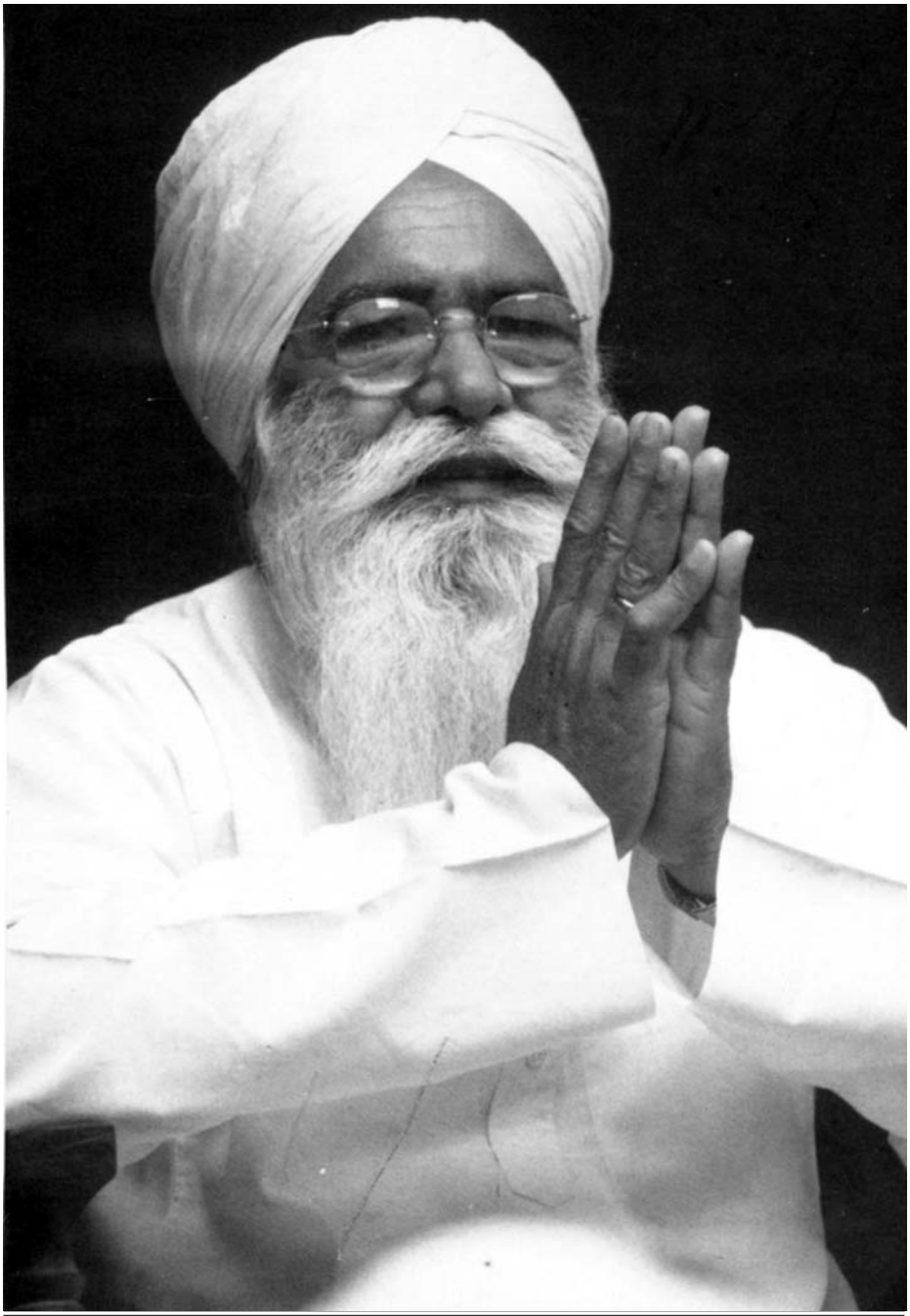

कबीर साहब हमें यही बताते हैं कि शिष्य के दिल में क्या दर्द है? शिष्य अपने गुरु के आगे **अरदास** करता है कि तूने मुझे जो नाम-सिमरन दिया है उसके लिए मेरे दिल में इतनी प्रीत है कशिश है कि जब तक मैं नाम-सिमरन याद नहीं करता तब तक मेरा तन मुर्दे के बराबर होता है। मुझे रात को नींद नहीं आती, देह को चैन नहीं आता। हजरत बाहू कहते हैंः

राती रत्ती नींद न आवे, देहा बहुत है रानी हूँ।

जब तक शिष्य सिमरन नहीं करता तब तक उसे चैन नहीं आता। फरीद साहब अपनी विरह की पीड़ा ऐसे ब्यान करते हैंः

मैं जाणेया दुख मुझको, दुख सवाया जग।
उच्चे चढ़के देखया, ते घर-घर ऐहो अग।।

मैं समझता था शायद गुरु के प्यार का दर्द मुझे ही है लेकिन जब मैं और प्रेमियों से मिलता हूँ फिर पता लगता है कि उसने जिन्हें यह विरह दी है उन सबकी यही हालत है। मैं जब सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचा तो वहाँ जाकर पता लगा कि गुरु यह आग जिस आत्मा में लगा देता है उस आत्मा को न दिन में चैन होता है न रात को नींद आती है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''प्यारेयो! गुरु ही शिष्य को ढूँढता है, गुरु ही शिष्य के अंदर विरह का बीज बीजता है। जिस तरह एक सपेरा बीन बजाता है चाहे साँप कितना भी जहरीला क्यों न हो बीन के आगे मस्त हो जाता है।'' इसी तरह परमात्मा कृपाल ने हमारे अंदर विरह का बीज बीजा तभी आज हम लोग कितनी-कितनी दूर से आकर उनकी याद में बैठे हैं, उनकी याद के गुण गा रहे हैं। यह प्यार की देन परमात्मा कृपाल की है।

नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलो गुसाईं।।

शिष्य **अरदास** करता है कि तू मेहर की नजर कर मेरे दिल में प्यास है। तेरे प्यार का पानी ही इस प्यास को बुझा सकता है।

बिरह सतावै मोहिं को, जिव तड़पै मेरा।।

मेरा दिल तड़पता है। जिस तरह प्यासा पानी के लिए तड़पता है इसी तरह जब सच्ची तड़प पैदा हो जाती है तो प्रेमी ऐसे बहाने नहीं बनाता कि मुझसे सिमरन नहीं होता या मेरा शरीर दुखता है। वह ऐसा कभी नहीं कहता क्योंकि उसे तो तड़प लगी होती है। जैसे प्यासा पानी-पानी पुकारता है वह यह नहीं पूछता कि पानी हिन्दु का है या मुसलमान का है? वह जल्दी से पानी पीना चाहता है; यही हाल गुरु और शिष्य का है।

जब शिष्य के दिल में सच्चा प्यार, सच्ची तड़प पैदा हो जाती है फिर जब तक उसका मिलाप गुरु से नहीं हो जाता वह भी दिन-रात तड़पता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं :

खोजत-खोजत भई वैरागन, प्रभ दर्शन की हौं पिरत तसाई।

तुम देखन की चाव है, प्रभ मिलो सवेरा।।

शिष्य गुरु से कोई मान-बड़ाई, धन-दौलत या हुकूमत नहीं माँगता और न ही यह विनती करता है कि मेरी बीमारी या बेरोजगारी दूर कर। वह तो दिन-रात यही **अरदास** करता है कि मैं तेरा दर्शन माँगता हूँ, तू जल्दी दर्शन दे।

गुरु अर्जुनदेव जी के इतिहास में आता है कि उनकी बिरादरी में किसी की शादी थी। गुरु रामदास जी को उस शादी का संदेश आया। गुरु रामदास जी ने अपने लड़को को उस शादी में जाने के

लिए कहा। आपके दो लड़को ने शादी में जाने से इंकार कर दिया फिर आपने गुरु अर्जुनदेव जी को शादी में लाहौर जाने के लिए कहा। उस समय गुरु अर्जुनदेव छोटी उम्र के थे। गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव से कहा, ''लाहौर जाकर संगत की सेवा करें लेकिन जब तक मैं न बुलाऊँ वापिस नहीं आना।''

गुरु अर्जुनदेव जी हमेशा अपने मकान के ऊपर चढ़कर देखते थे कि लाहौर से अमृतसर का फासला तीस मील का है शायद! यहाँ से अमृतसर नजर आ जाए। अमृतसर में मेरा गुरु रहता है। आप अपनी बानी में भी लिखते हैं:

एक घड़ी न मिलते ते कलयुग होता, हुण कद मिलिए प्रिय तुध भगवन्ता।
मोहे रैन न विहावे नींद न आवे, बिन देखे गुरु दरबारे जियो।।

एक तरफ तो बाहर गुरु का हुक्म था कि बिना बुलाए नहीं आना, दूसरी तरफ अंदर तड़प लगी हुई थी अगर अपनी प्यास को बुझाते हैं तो गुरु के हुक्म का उल्लंघन होता है। गणित विद्या वालों ने कलयुग की उम्र चार लाख बत्तीस हजार वर्ष लिखी है।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज एक घड़ी के विछोड़े को कलयुग के बराबर समझते हैं। आप कहते हैं, ''मुझे रात को नींद नहीं आती, दिन में चैन नहीं। मुझे कब दर्शन मिलेंगे? मैं दर्शनों से वंचित हो गया हूँ।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

जे इक छिन विछड़े तो जानूं बरस पचासा।

एक पल का विछोड़ा पचास साल के बराबर पड़ जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी मिलाप की घड़ी को कहते हैं, ''रात तू बढ़ जा और नींद को कहते हैं तू कम हो जा क्योंकि दिन चढ़ गया तो मेरा गुरु से विछोड़ा हो जाएगा।''

सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी आराम करने के लिए गर्मी के दिनों में डलहौजी जाया करते थे। वहाँ हर किसी को आने की इजाजत नहीं थी। प्रेमी इंतजार करते थे कि आप कब डेरे में वापिस आए, हम दर्शन करें। आप डलहौजी से आने के लिए तैयार हुए लेकिन फिर आपका विचार हुआ कि अभी वहाँ गर्मी है, आपने कुछ दिन और डलहौजी रहने का विचार बनाया।

महाराज कृपाल के दिल में सच्ची तड़प थी आपने तार दी कि आपके लिए तो वहाँ बसन्त है लेकिन हमारे लिए यहाँ अन्त है। जब तार महाराज सावन के पास गई तो महाराज जी ने उसी समय वापिस आने की तैयारी कर ली। डेरे आकर महाराज कृपाल से कहने लगे, ''ऐसी सख्त तार न दिया कर, मेरे दिल में भी उतनी ही तड़प होती है जितनी तुम्हारे दिल में होती है।''

नैना तरसै दरस को, पल पलक न लागै।।

नैनों में तड़प और विरह है अगर मैंने आँखों को बंद कर लिया कहीं ऐसा न हो! वह सामने आकर खड़ा हो जाए इसलिए मैंने आँखों को खुला रखा हुआ है। कबीर साहब कहते हैः

जब तू आवे आँख में, आँख झांप मैं लूं।
न मैं देखूं और को, न तुझे देखन दूं।।

मैं अपना दर्द बताया करता हूँ :

नैन ललारी नैन कसुंबा नैन नैना नू रंगदे।
इक नैन नैना दी करन मजूरी ते मेहनत मूल ना मंगदे।।

दर्दवंद दीदार का, निसि बासर जागै।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जिनके दिल में दर्द, प्यार और तड़प है कि मैंने अंदर गुरु का दर्शन करना है उन्हें न दिन को चैन है और न रात को ही चैन है।''

जो अब के प्रीतम मिलैं, करूँ निमिष न न्यारा।।

आत्मा प्यार से कहती है, ''अगर एक बार मिलाप हो जाए तो मैं उसे कभी भी अपने से अलग नहीं करूँगी क्योंकि जिनकी किसी के साथ लग जाए, उनकी आँख नहीं लगती।''

गुरमेल सिंह आपको महाराज सावन सिंह जी के जन्मदिन पर भजन सुनाएंगे। उस भजन की पहली तुक यह हैः

आ कृपाल कौल बैठ असां दे, फोल दिलां दे वरके।
होई कौण खनामी साथों, लंघ जांदो चुप कर के।।

अब कबीर गुरु पाया, मिला प्रान प्यारा।।

आप प्यार से कहते हैं, ''गुरु ने विनती सुनी, स्वीकार की क्योंकि सेवक की **अरदास** कभी भी बेकार नहीं जाती।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सच्चे दिल से गुरु से गुरु के मिलाप की **अरदास** की जाती है तो उसे गुरु जरूर सुनता है।'' कबीर साहब कहते हैं, ''गुरु जब शिष्य की प्यार भरी विनती सुनता है तो उससे भी रहा नहीं जाता।

प्यारेयो! मैं अपनी जिंदगी की कहानी सुनाया करता हूँ कि मुझे महाराज कृपाल की न कोई निन्दा करने वाला मिला था और न ही कोई आपकी बड़ाई करने वाला मिला था। मुझे यह भी नहीं पता था कि आप दिल्ली में रहते हैं या कलकत्ता में रहते हैं या कृपाल नाम का कोई सन्त भी है!

प्यारेयो! यह मेरी अंदर की फरियाद ही थी कि आप पाँच सौ किलोमीटर चलकर मेरे पास आए। मालिक के प्यारे अन्तर्यामी होते हैं। इन्हें पता होता हैं कि कौन हमें प्यार से याद कर रहा है, ये वहाँ जरूर पहुँचते हैं इसलिए मैंने एक शब्द में लिखा हैः

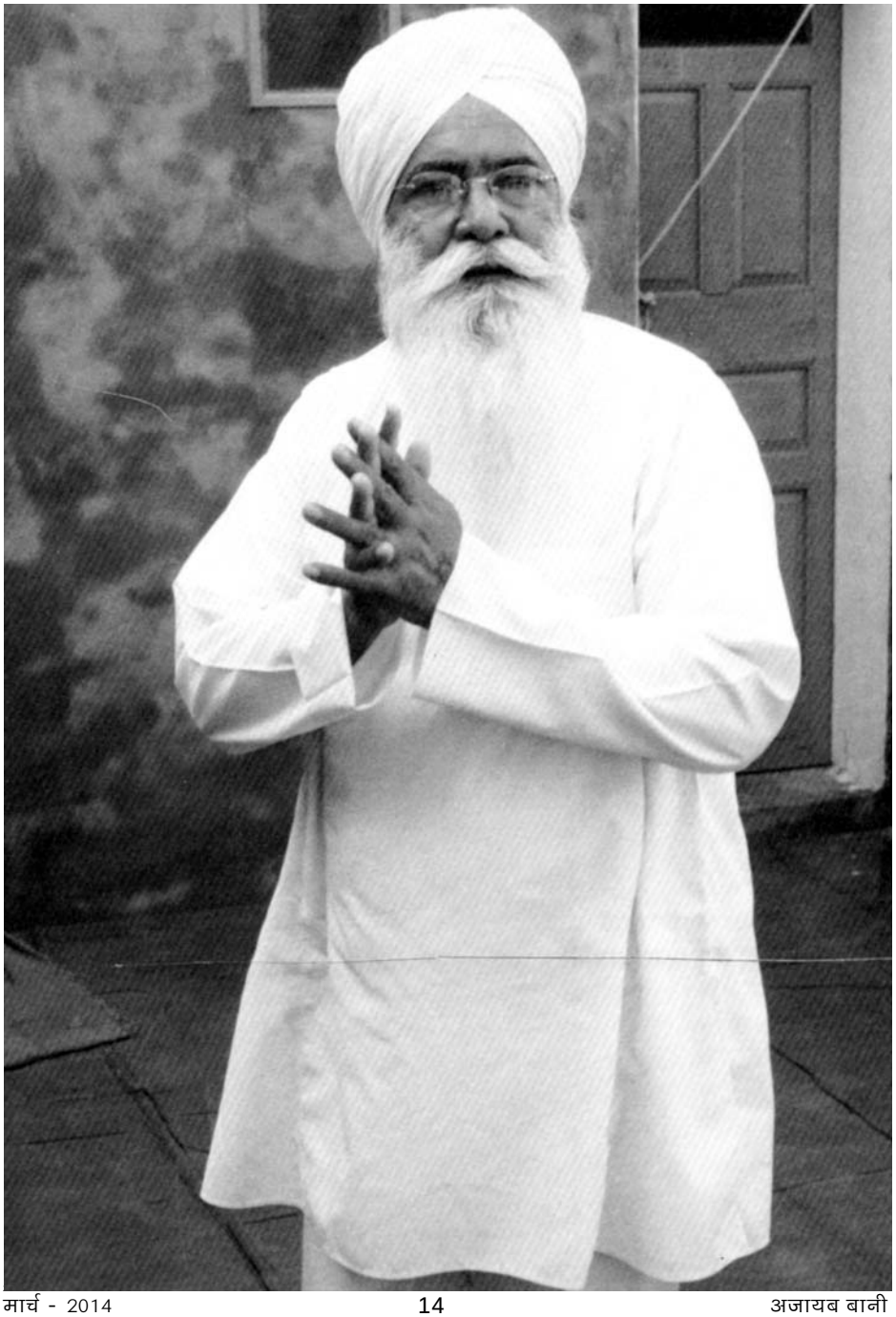

जद कूक सुणी अजायब दी, गई कलेजा चीर।
आसन छड सच्चखंड दा, आऐ कृपाल अखीर।।

प्यारेयो! अगर गुरु से गुरु को माँगा जाए तो वह जरूर सुनता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

बिन तुध होर जे मँगना सिर दुखा दे दुख।
दे नाम सन्तोखिया उतरे मन की भुख।।

हम अन्धे जीवों को माँगना भी नहीं आता कि हमने गुरु से क्या माँगना है?

पी ले प्याला हो मतवाला, प्याला नाम अमी रस का रे।।

प्यारेयो! मैं बताया करता हूँ कि जब तक आँखें पोंछने वाला पास न हो रोने का मजा नहीं आता। जब शिष्य तड़प बनाता है गुरु प्रकट होता है क्योंकि जहाँ आग लगी हो ऑक्सीजन उसकी मदद के लिए जरूर पहुँचती है। गुरु हमारी आत्मा को अंदर 'नाम' का प्याला पिलाता है जिसमें मस्ती है, हमारी आत्मा मस्त हो जाती है फिर दुनिया की मस्ती भूल जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होए आया।

बालपना सब खेल गंवाया, तरुन भया नारी बस का रे।।

आप प्यार से कहते हैं, ''बचपन खेल में ही बीत जाता है, जवानी विषय-विकारों में बीत जाती है और बुढ़ापा चिन्ता में बीत जाता है।''

बिरध भया कफ बाय ने घेरा, खाट पड़ा न जाय खिसका रे।।

बुढ़ापा आ जाता है चारपाई पकड़ लेते हैं। न अपने आप बैठा जाता है और न चला ही जाता है अगर उस समय भी सिमरन किया जाए तो वह भी कारगर है।

नाभि कँवल बिच है कस्तूरी, जैसे मिरग फिरै बन का रे ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा अंदर है। अंदर जाकर खोज़ करनी है हमारी हालत मृग जैसी है। कस्तूरी मृग की नाभि में होती है लेकिन मृग उसे झाड़ियों में ढूँढ़ता रहता है।''

बिन सतगुरु इतना दुख पाया, बैद मिला नहिं इस तन का रे ।।

आप प्यार से कहते हैं कि कभी मौत है तो कभी पैदाईश है। किसी को पता नहीं कि यह दुनिया कब बनी? हम इस संसार में कितने चक्कर लगा चुके हैं? हम कितनी बार पति या पत्नी बने? कितनी बार मच्छर या मक्खी बने? हम इतनी योनियों में तभी जाते हैं क्योंकि आज तक हमें गुरु नहीं मिला अगर हमें गुरु या नाम मिला होता तो आज हम यहाँ न बैठे होते।

प्यारेयो! इसी साल जनवरी का वाक्या है। जनवरी के शुरू में मुम्बई का प्रोग्राम था। गुरुमेल की दादी ने महाराज कृपाल के दर्शन किए हुए थे लेकिन महाराज सावन के दर्शन नहीं किए हुए थे। उसकी उम्र सौ साल थी उसे लकवा मार गया। घरवाले काफी परेशान थे। हम जीव 'शब्द-नाम' की उतनी परवाह नहीं करते जितनी हमें करनी चाहिए फिर अन्त समय में हमें दुनिया के ख्याल आते हैं। वह कुछ भी बोलती रहती थी इसी तरह अन्त समय में उसे भी दुनिया के ख्याल आने शुरु हुए। उसके चार लड़के हैं। सबके दिल में बड़ी परेशानी हुई कि पता नहीं यह किस योनि में जाएगी, इसका क्या होगा?

उसके लड़के मेरे पास आए मैंने कहा कि तुम क्यों परेशान होते हो इसे कुछ न कहो। उसी दिन शाम को उसे महाराज सावन-कृपाल के दर्शन हुए तो उसने कहा, ''छिड़काव कर दो, दरवाजा

खोल दो महाराज जी आ गए हैं।'' उसके लड़के निर्मल सिंह ने मुझसे पूछा, ''हम मुम्बई प्रोग्राम में जाएं या न जाएं?'' मैंने कहा माता से पूछो महाराज जी ने उसे दर्शन दिए हैं उसे कब लेकर जाना है वह खुद ही बताएगी। जब उससे पूछा तो उसने कहा, ''महाराज जी फिलहाल बोलते नहीं।'' पाँच-छह: दिन बाद अजीत सिंह ने मुझसे कहा माता ने हमें बताया है कि उसने आज जाना है।

प्यारेयो! यह एक सच है अगर गुरु मिला हो तो वह जरूर लेने के लिए आता है फिर हम भूतों-प्रेतों, जानवरों की तरह इस दुनिया में चक्कर नहीं लगाते। हम तो किसी को शांति से चोला भी नहीं छोड़ने देते। जब किसी का अन्त समय आता है तो सब अपनी-अपनी डफली बजाते हैं। पत्नी कहती है मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है? इसी तरह पति भी कहता है। बच्चे अपना रोना रोते हैं। हम किसी को आराम से मरने भी नहीं देते।

उस समय हमारा फर्ज बनता है अगर कोई बिना नामलेवा है तो उसे थोड़ा एक तरफ कर दें फिर मरने वाले से पूछें कि सिमरन याद है? अगर उसे सिमरन याद नहीं तो उसे सिमरन याद करवाएं। वह चुप करके नहीं जाएगा। वह हमें जरूर बताएगा कि सतगुरु आए हैं और मैं जा रहा हूँ।

मात पिता बंधू सुत तिरिया, संग नहीं कोय जाय सका रे।।

अन्त समय में माता-पिता, बहन-भाई कोई साथ नहीं जाता और न ही कोई समाज हमारी मदद करता है। जिस गुरु ने हमारे साथ चलना है हमारी मदद करनी है और दु:ख के समय में सहाई होना है उसके साथ हमारा प्यार नहीं, उसकी याद भुलाए बैठे हैं।

जब लग जीवै गुरु गुन गा ले, धन जोबन है दिन दस का रे।।

आप कहते हैं, ''इस दुनिया की मान-बड़ाई, धन-दौलत और जवानी सब ढ़लता परछावा है इसलिए जब तक सांस है गुरु को न भूलें।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर ।
गुरु की टेक रहो दिन-रात, जाकीं कोए न मेटे दात।
गुरु करता गुरु करने जोग गुरु परमेश्वर है भी होग।
कहो नानक प्रभ ऐह जनाई, बिन गुरु मुक्ति न पाइए भाई।।

चौरासी जो उबरा चाहै, छोड़ कामिनी का चस्का रे।।

अगर आप चौरासी और जन्म-मरण के दुःखों से बचना चाहते हैं तो विषय-विकारों से मुँह मोड़कर अपने ख्याल को 'शब्द-नाम' की तरफ जोड़ें।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नख सिख पूर रहा विष का रे।।

कबीर साहब ने हमें इस छोटे से शब्द में प्यार से समझाया है कि जब शिष्य के अंदर सच्ची तड़प, सच्चा प्यार होता है तो वह गुरु के आगे **अरदास** करता है। गुरु से गुरु को माँगता है तो गुरु भी प्यार का बंधा हुआ जरूर आता है क्योंकि गुरु ने ही शिष्य के अंदर प्यार का बीज बोया होता है। वह जरूर आकर दर्शन देता है।

हमें भी चाहिए अपने दिल में सच्ची तड़प, सच्चा प्यार बनाएं। 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाएं। ***

DVD - 582

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *बगोटा में सन्तबानी स्कूल के विकास के लिए सबसे अच्छा तरीका क्या है?*

बाबा जी: कैंट बिकनल ने सन्तबानी स्कूल को काफी कामयाब किया है। कैंट इस मौके पर यहाँ आया हुआ है और आपके बीच में बैठा है। मैंने पहले भी कई बार प्रेमियों को सलाह दी है कि आप इससे सलाह लें कि क्या-क्या मुश्किलें पेश आ रही है और उन्हें कैसे दूर करना है? यह आपको हर तरह की जानकारी देगा।

एक प्रेमी: *क्या सतसंगी को किसी बेसतसंगी से खून लेना या उसे खून देना ठीक है?*

बाबा जी: ऐसा करने से मुश्किल तो होती है लेकिन इससे हमारा शुभ कर्म ज्यादा बनता है अगर हम अपने खून के दो कतरे देकर किसी की जान बचाते हैं तो इसे दया करना कहते हैं। किसी का फायदा होता है तो हमें दया करनी चाहिए। ऐसा करने से हमारा भी फायदा होगा।

डॉक्टर जानते हैं कि वही खून फायदेमंद होता है जो खून एक-दूसरे से मिलता हो। डॉक्टर वही खून लेते हैं जो फिट आ जाए। वहाँ सतसंगी या बेसतसंगी का लिहाज़ नहीं होता।

एक प्रेमी: *मैं जानना चाहता हूँ कि क्या अन्त में सभी आत्माओं की मुक्ति हो जाएगी और सभी वापिस सचखण्ड चले जाएंगे? यहाँ तक कि काल, ब्रह्मा, विष्णु, शिव सभी देवता वापिस चले जाएंगे?*

बाबा जीः सबसे पहली बात तो यह है कि हमें अपना फिक्र करना चाहिए। पहले अपनी आत्मा को मन इंद्रियों से आजाद करवाएं। देवी-देवता ब्रह्माण्ड से नीचे हैं हम इन्हें खुद अपनी आँखों से देख सकते हैं कि ये ऊपर जाते हैं या नहीं। हमें सबसे पहले अपने बारे में सोचना है। पहले अपनी आग बुझाएं फिर दूसरों की फिक्र करें। सन्तमत में यही शिक्षा दी जाती हैः

पहले मन परबोधे अपना, पीछे अवर रिझावे।

एक प्रेमीः *जैसे हर जन्म में आत्मा एक ही रहती है कर्मों की वजह से शरीर में तबदीली आती है। क्या आत्मा की तरह मन भी वही रहता है या कर्मों के अनुसार मन में पूरी तरह या आशिंक रूप से तबदीली आती है?*

बाबा जीः सही जानकारी और ठोस जवाब तो हम अंदर जाकर ही मालूम कर सकते हैं क्योंकि सच्चाई अंदर है। फिर भी महात्माओं ने बाहर समझाने के कई तरीके बताए हैं। जैसे लोहे को गर्म करने के लिए आग में डाला जाता है बेशक लोहा जलता नहीं लेकिन लोहा आग का रूप होकर लाल हो जाता है। इसी तरह जिन पिंजरों में हमारी आत्मा और मन रह रहे हैं उनका असर इन पर जरूर होता है। हमारे पिछले अच्छे-बुरे कर्मों के हिसाब से ही हमारा मन बनता है। उसके मुताबिक ही हमारी आत्मा पर अच्छा या बुरा असर पड़ता है। गुरु नानक जी कहते हैंः

ऐह मन कर्मा ऐह मन भरमा, ऐह मन पंच तत से जन्मा।

कबीर साहब मन को इस तरह से ब्यान करते हैः

ऐह मन शक्ति ऐह मन सीयो, ऐह मन पंच तत का जीयो।

हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है और मन काल का एजेन्ट है इसलिए ये दोनों एक कैसे हो सकते हैं। ज्यादातर हमारे मन पर पिछले कर्मों का ही असर होता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मन जैसा कोई दुश्मन नहीं अगर इसे समझाकर इसके ठिकाने ब्रह्म में पहुँचा दें जहाँ इसकी पैदाईश है तो इस जैसा कोई वफादार दोस्त भी नहीं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी को सारी जिन्दगी बाल की खाल नहीं निकालते रहना चाहिए कि ऐसा क्यों है या ऐसा क्यों नहीं?'' हमें सबसे पहले अपनी आत्मा की पहचान करनी चाहिए। जब हम आत्मा से तीनों पर्दे- *स्थूल, सूक्ष्म और कारण* उतार देते हैं तो मन नीचे रह जाता है। त्रिकुटी ब्रह्म में जाकर हम खुद अपनी आँखो से देख सकते है कि मन किस मसाले का बना हुआ है, यह तबदील होता है या नहीं?

हमेशा बताया जाता है कि प्रलय में ब्रह्म, ओम तक जो भी पैदाईश है वह एक बार समाप्त हो जाती है। जो वहाँ तक पहुँचा है वह भी समाप्त हो जाता है। महाप्रलय में, भंवर गुफा तक सब मण्डल ढ़ह जाते हैं। जब परमात्मा रचना रचता है, वहाँ तक जितनी भी आत्माएं पहुँची है उन्हें फिर संसार में आना पड़ता है।

सचखण्ड वह देश है जहाँ प्रलय, महाप्रलय नहीं पहुँचती। सचखण्ड पहुँची हुई आत्माएं फिर इस संसार में नहीं आती। सिर्फ वही आत्माएं आती है जिन्हें परमात्मा इशारा करता है कि आप संसार में जाकर काल के जाल में फँसी हुई आत्माओं को सचखण्ड ले आओ। वे इस काल के जीवों को आकर संदेश देते हैं, ''प्यारेयो! यह तुम्हारा देश नहीं, तुम्हारा घर नहीं। काल ने आपको यह

शरीर का पिंजरा दिया है; आओ! हम आपको सचखण्ड के मालिक आपके पिता के पास ले चलते हैं।''

यह बड़ा दिलचस्प सवाल है। हो सकता है सवाल कर्ता भी डॉक्टर हो। इस ग्रुप में बहुत से डॉक्टर भी आए हुए हैं। डॉक्टरों ने बहुत ऑपरेशन किए होते हैं अगर यह डॉक्टरों के समझने की चीज़ होती तो वे चीरफाड़ करके जरूर देख लेते। ये सब चीज़ें सूक्ष्म हैं अंदर जाकर समझने वाली हैं। जब हम अंदर जाते हैं तो कोई शक नहीं रहता, अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। जो चीज़ अमर है वह कभी फनाह नहीं हाती। जब वहाँ के मण्डल ही प्रलय में ढ़ह जाते हैं तो वहाँ की बनी चीज़ें कैसे रह सकती हैं।

इस दुनिया में इंजीनियरों ने टेलिविजन, रेडियो बनाए हैं। अगर हम उनसे यह सवाल करें कि आपने हर टेलिविजन में अलग-अलग औरतें, मर्द या साज डाले हैं तो वे हमें क्या समझाएँगे? इससे बेहतर हैं कि हम खुद इंजीनियर बनें और सीखें तो हमें पता लगेगा कि एक सेट बनाकर फिर उसी तरह के और भी सेट बनाए जाते हैं। उनमें बार-बार कोई तब्दीली नहीं की जाती केवल समझने की जरूरत होती है।

जो भेद से वाकिफ नहीं होते उनकी अक्ल उन्हें हमेशा परेशान करती रहती है। जो जानकार होते हैं उनका ऐसा कोई सवाल नहीं होता, उनका मन उन्हें परेशान नहीं करता। इसी तरह अगर हमने परमात्मा की कलाकारी को समझना है उस इंजीनियर को समझना है तो हमें भी अंदर जाकर उससे मिलाप करना पड़ेगा। फिर अपने आप मसला हल हो जाएगा कि यह तब्दील होता है या एक ही रहता है। यह सवाल दिलचस्प और प्यारभरा है। मैं आशा करता हूँ कि हम उतने ही प्यार से अंदर जाने की कोशिश करें।

प्यारेयो! यह बात बड़ी दिलचस्प और हँसने वाली भी है। मेरे पास एक रूपराम रहा करता था। आज से पच्चीस साल पहले उसे दिल्ली जाने का मौका मिला। राजस्थान में थोड़े समय पहले ही सड़के बनी हैं बसें चलने लगी हैं और फैशन वगैरह प्रचलित हुआ है। यहाँ के लोग बहुत सीधे-साधे थे। दिल्ली में रूपराम ने एक औरत देखी। उस समय दिल्ली में औरतें बड़े-बड़े जूड़े बनाया करती थी। जब उसने औरत को देखा तो सोचा कि शायद! औरत के दो सिर हैं। डबल डेकर बस देखी तो सोचा कि शायद! बस के ऊपर बस रखी हुई है। यहाँ पर उसने कभी एक बस भी नहीं देखी थी। वह जिसके साथ दिल्ली गया वह भी मजाकिया किस्म का आदमी था। उसने उसे कुछ नहीं समझाया। जब रूपराम वापिस आया तो मैंने उससे पूछा, ''दिल्ली में क्या देखा?'' रूपराम ने कहा, ''एक लुगाई के दो सिर और बस पर बस।''

मैंने रूपराम से कहा, ''तू यह बात किसी से मत करना।'' अगर किसी ने कोई नई चीज़ देखी हो तो उसका दिल करता है कि वह सबको बताए। उसके गाँव के लोगों ने उससे पूछा कि रूपराम दिल्ली गया था, क्या देखा? उसने कहा, ''बस पर बस और एक लुगाई के दो सिर।'' किसी ने भी उस पर यकीन नहीं किया सबने उसे झूठा साबित कर दिया। वह परेशान होकर मेरे पास आया, ''मैंने उससे कहा अगर इस बात को सच बनाना है तो तू उनसे कह कि किराया मैं देता हूँ आप लोग मेरे साथ चलकर अपनी आँखों से देखें।'' न कोई साथ जाने के लिए तैयार था और न बात मानने के लिए तैयार था।

इसी तरह सन्तों की कहानी है। सन्त भी यहाँ आकर उस देश के बारे में बताते हैं लेकिन हम उन पर विश्वास नहीं करते।

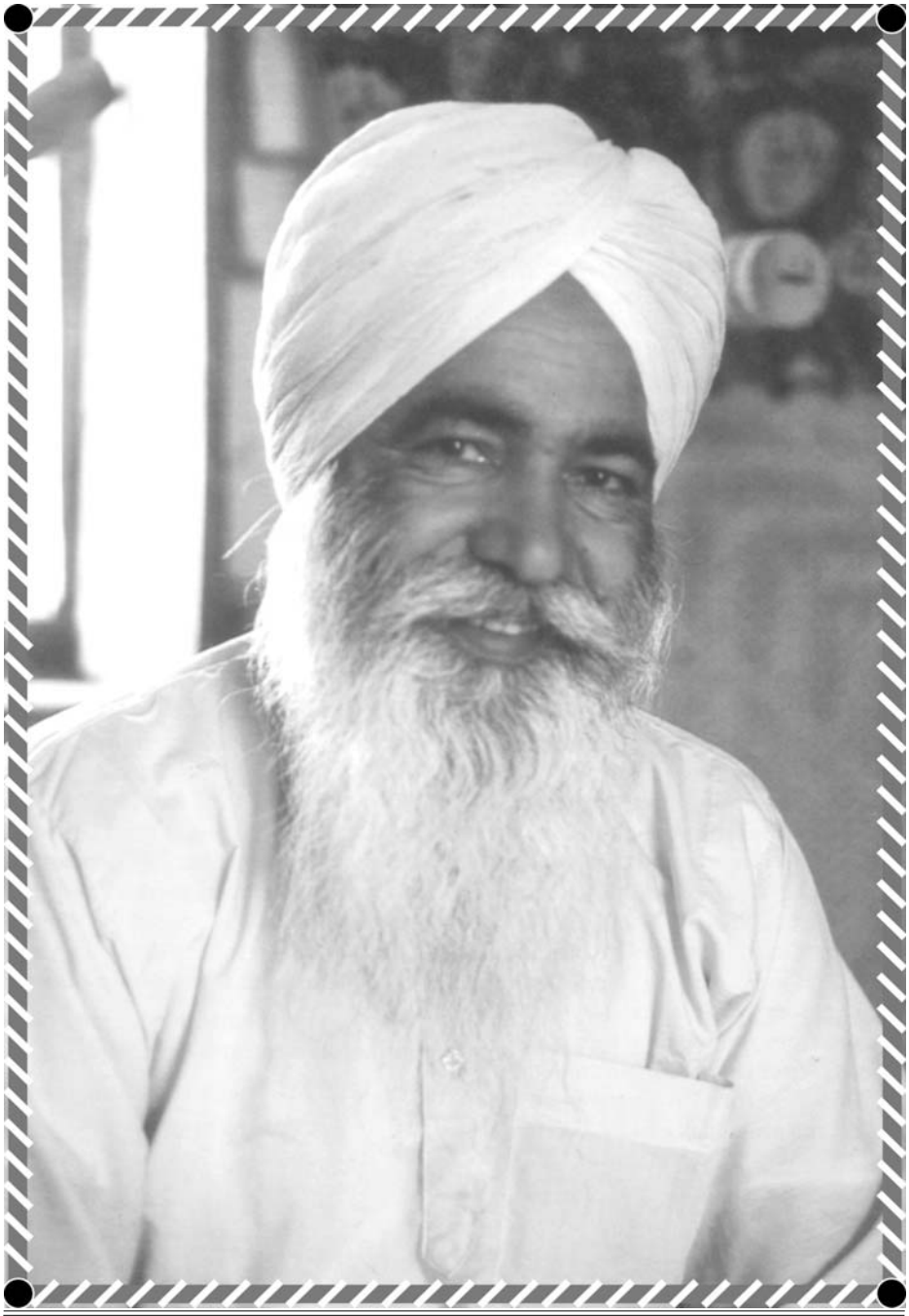

सन्त भी हमें रूपराम की तरह बहुत मिसालें देते हैं कि चलो हमारे साथ चलकर खुद देखो लेकिन हम साथ चलने को तैयार नहीं होते। सन्त दयालु होते है और किसी भी सवाल पर नाराज नहीं होते।

हमारे इलाके के दो-तीन प्रेमी बाबा सावन सिंह जी से नामदान प्राप्त करने के लिए गए। वे जब पंजाब गए तो उनका मिलाप किसी सतसंगी से हुआ। उस सतसंगी ने बताया अगर भगवान देखना है तो सिकंदरपुर में महाराज सावन सिंह जी के पास चले जाओ। महाराज सावन सिंह जी के इलाके में गन्ने की खेती काफी होती थी। वे बुजुर्ग प्रेमी महाराज सावन सिंह जी के पास चले गए। महाराज जी घर पर ही थे।

उन प्रमियों ने महाराज सावन से कहा, ''सरदार जी! हम भगवान देखने के लिए आए हैं।'' महाराज जी हमारे इलाके के लोगों के बारे में जानते थे। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''चौधरियों! भगवान तो आपको बाद में दिखाएँगे पहले आप रस पिओ, ये आपके इलाके में नहीं होता।'' महाराज जी ने एक सेवादार से कहा कि इन्हें पेट भरकर रस पिलाओ। उस समय राजस्थान के इलाके में नहर का पानी नहीं था, पानी की कमी थी और अकाल की वजह से लोग इतने खुले दिल से कोई भी वस्तु नहीं दे सकते थे। चौधरियों पर इस बात का बहुत असर हुआ कि सरदार का दिल बहुत बड़ा है, यह हमें खुले दिल से रस पिला रहा है।

कुछ समय बाद महाराज सावन सिंह जी वहाँ आए और पूछा कि इन्हें रस पिलाया? चौधरी कहने लगे हाँ जी, हम तो भरपूर है आपके जैसा बड़े दिलवाला हमने नहीं देखा, अब आप हमें भगवान दिखाएं। महाराज जी ने उन्हें खेत में बिठाकर सन्तमत की थ्योरी समझाई और अभ्यास पर बिठाया। महाराज जी ने कहा, ''सन्त

भगवान नहीं होते, सन्तों के पास भगवान से मिलने की युक्ति होती है। जब आप रोज़ाना अभ्यास करेंगे तो अंदर जाकर सच्चाई को खुद ही देख लेंगे।''

कुछ समय पहले ही उस प्रेमी ने बहुत बुजुर्ग होकर शरीर छोड़ा है। वह बताया करता था कि महाराज सावन सिंह जी हमारी भोली-भाली बातों से नाराज नहीं हुए बल्कि खुश हुए।

एक प्रेमीः *तकरीबन डेढ़ साल पहले मेरे पिता का देहान्त हो गया, वह नामलेवा थे। चोला छोड़ने से कुछ दिन पहले उन्होंने हमें दवाईयाँ और खान-पान देने के लिए मना कर दिया। हमने उनकी बात का आदर करते हुए वैसा ही किया। दो दिन बाद उन्होंने बड़ी शान्ति से चोला छोड़ दिया। हमारा सवाल यह है अगर कोई मौत के नज़दीक हो और वह दवाईयाँ और खाने-पीने से इंकार कर दे तो उसके प्रति हमारा क्या रवैया होना चाहिए? अगर कोई बेसतसंगी इस तरीके से विनती करे तो हमारा क्या रवैया होना चाहिए? क्या हमें दवाईयाँ जारी रखनी चाहिए या उस व्यक्ति की इच्छाओं की कद्र करते हुए जैसा वह कहे वैसा करना चाहिए।*

बाबा जीः कुछ महीने पहले जूडिथ प्रकिन्स की माता जी चोला छोड़ गई। उसने डॉक्टरों की वजह से अपनी माता का अंत समय काफी दुखदाई देखा। जूडिथ ने मुझे पत्र में लिखा और इंटरव्यू में भी बताया कि आप हर सतसंगी को यह सलाह दें कि वह अपनी वसीयत करवा दे ताकि जब उसका अन्त समय आए तो वह घर में ही शान्ति से चोला छोड़ सके और उसे डॉक्टर परेशान न करें। मैंने जूडिथ से कहा कि हर इंसान की अपनी-अपनी इच्छा होती है किसी को मजबूर नहीं किया जा सकता कि अपनी वसीयत करवाएं।

इसमें सतसंगी या बेसतसंगी का कोई मतलब नहीं होता। आजकल डॉक्टरों ने काफी तरक्की की है मशीनरी के ज्यादा से ज्यादा साधन भी हैं। बहुत से प्रेमियों की ऐसी इच्छा भी होती है कि आखिरी साँस तक उनकी देखभाल की जाए। वे यह चाहते हैं कि उन्हें किसी भी तरीके से बचाया जाए। जो ऐसा चाहता है उसकी देखभाल करनी चाहिए और जो यह चाहता है कि मुझे शान्ति से शरीर छोड़ने दो तो उसके साथ ऐसा ही करें।

आप डॉक्टर है, इस ग्रुप में और बहुत से पढ़े-लिखे और डॉक्टर बैठे हैं। आजकल डॉक्टरी धन्धे में काफी तरक्की हुई है। बनावटी दिल लगा देते हैं, किसी की आँख दूसरे को लगा देते हैं। पिछले जमाने में अगर किसी को पत्थरी भी होती थी तो पत्थरी निकालने के लिए केवल दवाईयाँ ही दी जाती थी। अगर पेशाब नहीं आता था तो कई-कई दिन मरीज दुखी रहता था। अपैंडिक्स और भी कई अंदरूनी बीमारियाँ होती थी जिनका ऑपरेशन के सिवाय और कोई इलाज नहीं था लेकिन आजकल डॉक्टरों ने मरीजों को काफी सहूलियत दिलवाई हुई है।

आपका सवाल है कि अन्त समय में अगर मरीज कहता है कि मुझे मेरी इच्छा पर रहने दो तो क्या उसे उसकी इच्छा पर रहने देना चाहिए? कई बार बड़े-बड़े लीडर आखिरी समय तक डॉक्टरों की मदद से साँस जरूर लेते रहते हैं लेकिन कुछ दिनों बाद घोषणा करनी पड़ती है कि साँस की गति रूक गई है। ऐसे समय में सबसे पहले मरीज की इच्छा जाननी चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

वैद्य कहे हों ही भला दारू मेरे वस, ऐह ते वस्तु गोपाल की जब भावे ले खस।

बीमारी की दवाई है लेकिन मौत की कोई दवाई नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नर घाले सब दिवस, घटन वधन तिल सार।
जीवन लोड़े भरम मोह, ते नानक त्यों गवार।।

परमात्मा ने हमारे अंदर गिनकर साँस डाले हुए हैं, ये न तो कम हो सकते हैं और न बढ़ ही सकते हैं। उस समय हम हर किस्म का उपाय करते हैं क्योंकि संसार में हमारा मोह होता है। मरीज के दिल में यह भ्रम होता हैं कि शायद इस उपाय से मैं बच जाऊं!

महाराज सावन सिंह जी दुनिया के इतिहास का जिक्र किया करते थे कि शाह सिकंदर ने ज्योतिषीयों से पूछा कि मुझे मौत कब आएगी? ज्योतिषीयों ने कहा, ''बादशाह सलामत! जब सोने का आसमान और लोहे की धरती होगी तब आपकी मौत होगी।'' शाह सिकन्दर ने सोचा न आसमान सोने का होगा न धरती लोहे की होगी। मैं तो कोई इलाही देवता हूँ, मुझे कौन जीत सकता है! इसी बात को लेकर वह अपना डंका बजाकर हर तरफ चढ़ाई करता रहा कि मैं दुनिया में अपने आपको विजेता साबित करूँगा।

जब शाह सिकन्दर ने हिन्दुस्तान पर हमला किया वह सब कुछ लूटकर वापिस जा रहा था तो शीशतान में उसे मच्छर ने काटा, मलेरिया बुखार हो गया। सिकन्दर ने अपने वजीर से कहा, ''अब मुझसे चला नहीं जा रहा मुझे घोड़े से नीचे उतार दो और डॉक्टर बुला लो।'' उस समय योद्धा जंग पर जाते थे तो आमतौर पर लोहे के कोट पहनते थे ताकि तलवारों से जख्म न हो जाएं। वजीर ने अपना कोट उतारकर नीचे बिछा दिया और बादशाह की सोने की ढ़ाल से उसके मुँह पर छाया कर दी।

हमें पता है कि जब मौत आनी होती है तो दिल अंदर से गवाही दे देता है कि अब आखिरी वक्त आ गया है।

सिकन्दर को ख्याल आया कि अब सोने का आसमान और लोहे की धरती बन गई है। उसने डॉक्टरों से कहा कि इस वक्त मेरी अपनी माता से मिलने की इच्छा है आप मेरी मदद करें तो मैं आपको मुँह माँगा धन दूँगा। डॉक्टरों ने कहा इस समय कुछ नहीं हो सकता फिर बादशाह ने कहा कि मैं अपना सारा राज्य दे दूँगा, माँगकर खा लूँगा लेकिन आप एक बार मेरी माता से बात करवा दें। डॉक्टर कहने लगे कि इस वक्त एक भी साँस नहीं बढ़ सकता।

शाह सिकन्दर जो अपने आपको विजेता समझकर चला था, उस समय दहाड़े मारकर रोया अगर मुझे पता होता कि श्वांस इतने कीमती हैं, कोई भी डॉक्टर श्वांस नहीं बढ़ा सकता तो क्यों न मैं इस जीवन में भजन-सिमरन करता।

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा था। जब उसका अन्त समय आया तो घरवालों ने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने कहा कि इसे ब्रांडी और अंडो की खुराक दो यह ठीक हो जाएगा। वह सतसंगी यह नहीं चाहता था लेकिन घरवालों ने कहा कि इसमें क्या हर्ज है। घर के लोगों ने जबरदस्ती उसके मुँह में शराब और अंडे डाल दिए। उस समय उस सतसंगी की अंदर सुरत लगी हुई थी, महाराज सावन सिंह जी प्रकट थे।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''देख प्यारेया! अब तू चार दिन और तड़प ले ताकि अंडो और ब्रांडी का असर खत्म हो जाए तो हम तुझे लेने आ जाएंगे।'' उसने आँखें खोली और घरवाली से कहा, ''महाराज जी आए हुए थे नाराज होकर चले गए हैं और चार दिन का वायदा करके गए हैं। तू सतसंगी है, मेरी अर्धांगिनी है, मेरी पत्नी है; तूने मेरी बहुत सेवा की है। अब आखिरी समय

में यह सेवा भी कर ले तू दरवाजे में जाकर बैठ जा, मैं जब तक श्वांस न छोड़ूँ तब तक किसी को अन्दर मत आने देना।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! जब अन्त समय आता है उस समय कोई दवाई कारगर नहीं होती और न ही माँस, अंडे कारगार होते हैं। जिसने जाना होता है अगर वह चाहता है कि मैं शान्त मन से चोला छोड़ूँ, तो उस समय मालिक का भाणा मानना चाहिए।'' यह महाराज सावन सिंह जी के जीवन काल का ही वाक्या था।

कुछ महीने पहले मुझे काफी बुखार हुआ और उल्टियाँ आई, बुखार दिमाग में आ गया जिससे मैं बहुत कमजोर हो गया। मैं नहीं चाहता था कि डॉक्टर आए लेकिन मेरी लड़की और दामाद दोनों घबरा गए इन्होंने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने आते ही कहा कि इनके बाईं तरफ निमोनिया है। आप इन्हें अभी रायसिंह नगर ले चलो मैं इनके एक्स-रे वगैरह करवा दूंगा अगर देर हो गई तो मुझे कुछ मत कहना। मैंने डॉक्टर को प्यार से कहा कि मुझे निमोनिया नहीं है, मेरी अंदर की धड़कन और मशीनरी ठीक चल रही है। उसने ऊँची आवाज में कहा अगर आपने अपनी ही मर्जी करनी है तो मुझे बुलाने की क्या जरूरत थी।

जो मेरी देखभाल कर रहे थे मैं उनकी खातिर चुप हो गया। बुखार के कारण बेहोशी ज्यादा थी। ये मुझे रायसिंहनगर ले गए और तीन-चार घंटे मेरी देखभाल करते रहे। दूसरे डॉक्टर ने कहा इन्हें निमोनिया नहीं, यह दिल के मरीज है इन्हें ब्लड-प्रेशर है और भी बहुत कुछ बताया। मैंने उस समय सिर हिलाकर कहा कि मुझे यह रोग नहीं है लेकिन किसी ने भी मेरी बात नहीं मानी।

डॉक्टर ने गुरमेल को बहुत सी दवाईयाँ दी कि समय-समय पर इन्हें ये दवाईयां देते रहना। मैंने कहा प्यारेयो! मुझे ऐसा कोई भी रोग नहीं है। आप पैसे खर्च करके दवाईयाँ ले आए हैं लेकिन मुझे ये दवाईयाँ न दे फिर भी किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। जैसे ही मुझे एक खुराक दी मैं पहले तो बातें कर रहा था लेकिन वह खुराक खाकर मैं बिल्कुल बेहोश हो गया; मुझे पंद्रह मिनट तक होश नहीं आई कि मैं कहाँ पड़ा हुआ हूँ। जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मेरी लड़की का सिर मेरी छाती पर था गुरमेल और उसके पिता रो रहे थे, सबकी बुरी हालत थी।

मैंने तुम्हें कहा था कि मुझे यह दवाईयाँ मत दो मैं ठीक-ठाक हूँ, मेरा बुखार उतर जाएगा फिर गुरमेल ने सारी दवाईयाँ कुई में फैंक दी। डॉक्टर यह दावा करता था कि यह दिल के मरीज है इन्हें निमोनिया है। उसने किसी दूसरे डॉक्टर से शर्त लगाई कि अगर इन्हें यह बीमारी न हुई तो मैं डॉक्टरी छोड़ दूँगा। मैंने उसकी कोई दवाई नहीं ली।

आखिर एक मामूली से डॉक्टर ने आकर कहा कि मुझे सन्तों की सेवा करने का थोड़ा सा मौका दें तो हो सकता है यह ठीक हो जाएं। उसने मुझे थोड़ी सी दवाई दी जैसे एक बच्चे को देते हैं तो मैं उसी से ठीक हो गया। मैंने अपनी लड़की और दामाद को प्यार से कहा, ''अगर कभी मेरी ऐसी हालत हो या मैं बेहोश हो जाऊँ तो मुझे किसी भी अस्पताल में लेकर नहीं जाना। मुझे आराम से मेरी चारपाई पर पड़े रहने देना।''

मैं यही कहूँगा अगर हम किसी को शान्ती से चोला छोड़ने दें तो यह भी एक प्रकार की सेवा होती है। उस समय मरीज की इच्छा मुताबिक करें वही अच्छा है।

एक प्रेमी: *मेरा सवाल अंदर जाने के बारे में है। सेवक को अंदर जाने के लिए क्या करना चाहिए? जब सेवक अंदर जाना शुरु कर देता है तो उसे कैसे पता चलता है कि उसने अंदर जाना शुरु कर दिया है?*

बाबा जी: हाँ भई! सबसे पहले सेवक को गुरु से प्यार और गुरु पर विश्वास होना चाहिए। अगर ये दोनों चीज़े हैं तो मेहनत करने का उत्साह अपने आप ही पैदा होता है। गुरु की दया और सेवक की मेहनत दोनों चीज़े बराबर चलती हैं। हम जिसका काम कर रहे हैं वह सतगुरु बेइंसाफ नहीं। सतगुरु जरूर अपनी दया करता है अगर हम मेहनत के चोर हैं तो गुरु दया कैसे करेगा?

हम यहाँ बैठे सबकी शक्ल देख रहे हैं कि किसका सिर ढ़का हुआ है और किसका सिर नंगा है। किसके बाल छोटे हैं या किसके बाल बड़े हैं। किसकी आँखों पर ऐनक लगी है या नहीं लगी। इसी तरह हम अंदर इससे भी साफ देख सकते हैं। जब हम अंदर जाएंगे तो खुद ही अपनी आँखों से सब देखेंगे और गवाही भी देंगे। हम सतगुरु की दया का बदला नहीं चुका सकते।

आपके बहुत से भाई राजस्थान ग्रुप में आकर अभ्यास करते हैं उनमें से कुछ अंदर के नजारे बताते हैं और गुरु की दया का शुक्राना भी करते हैं। जो सेवक आलस्य करता है आज का काम कल पर डाल रहा है उससे सन्त-सतगुरु खुश नहीं होते। सतगुरु सेवक की तरह धीमी चाल चलकर खुश नहीं होते।

सतगुरु चाहते हैं कि हमारे जीवन काल में ही सबके अंदर शब्द की धार प्रकट हो जाए। वही टीचर अपने आपको टीचर कहलवाने का हकदार होता है जिसके ज्यादा से ज्यादा बच्चे पास

हो। इसी तरह सन्त-सतगुरु भी चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा सेवक हमारे जीवन काल में ही कामयाब हों, शब्द की धार को प्रकट करें और मेरे पीछे भटके नहीं।

एक प्रेमीः *हमें कई बार ऐसे रिश्तेदारों, मित्रों से मिलाप करना पड़ता है जिनके रिश्तेदार मर चुके होते हैं या मर रहे होते हैं। इस तरह के दुखी लोगों को हमें क्या कहना चाहिए?*

बाबा जीः आप रोज ही सतसंग सुनते हैं कि इस संसार में बड़े-बड़े वली, पैगम्बर आए वे भी थिर नहीं रहे। हर किसी ने एक दिन इस संसार को छोड़ जाना है। परमात्मा के आगे हमारा कोई जोर नहीं, उसका भाणा मानने में ही हमारा फायदा है। यह मौत और पैदाईश का देश है। कईयों ने हमें विछोड़ा देकर जाना है और कईयों को हमने विछोड़ा देना है।

मारकण्डे ऋषि ने ज्यादा से ज्यादा उम्र भोगी आखिर वह भी संसार को छोड़ गए। रावण के लाखों पोते और पुत्र थे उसने भी काफी लंबी उम्र भोगी आखिर वह भी संसार को छोड़ गया। त्रेता युग में रामचन्द्र जी महाराज आए उन्होंने दस हजार साल उम्र भोगी, अच्छा राज्य किया आखिर उन्हें भी एक दिन संसार छोड़ना पड़ा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

राम गयो रावण गयो जांको बोह परिवार।
कहो नानक थिर कुछ नहीं सुपने ज्यों संसार।।

अगर हम उन मित्रों की बात नहीं सुनेंगे तो वे बुरा महसूस करेंगे अगर हम उनके पास रोएंगे तो हम उनके दुख को बढ़ावा देंगे। हमें उन्हें प्रेम-प्यार से समझाना चाहिए कि आप सब्र करें, मालिक का भाणा मानें।

***

धन्य अजायब

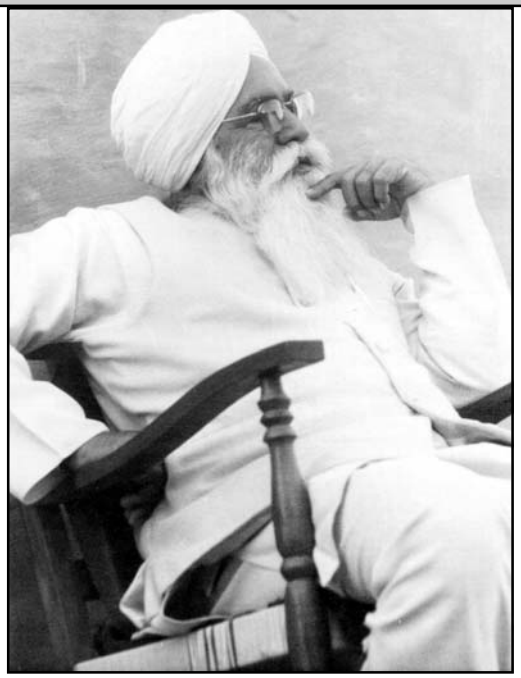

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 16,17 व 18 मई 2014 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)

नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा - 9810212138 :सोनू सरदाना - 9810794597: सुरेश चोपड़ा - 9818201999